जागो भोले नाथ

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

जागो भोले नाथ जागो पृथ्वी पर बड़ा पाप हो रहा है। ये आवाज़ जुरावर सिंह के गेट के पास बने हुये भोले नाथ के एक छोटे से मन्दिर से अक्सर व बेशतर आधी रात के क़रीब आती थी। इस आवाज़ में बला का दर्द और फरयाद थी लगता था कोई ज़माने का सताया हुआ आदमी भोले नाथ से फरयाद और ज़माने की शिकायत कर रहा हो।

कहो जुग्गा तुम आ गये धोती कुर्ता पहने एक सफेद पोश, जैकेट पहने हुये एक नौजवान से मुखातिब था। अब के बहुत दिनों के बाद बुलाया अब की किस को खल्लास करना है जुग्गा ने उस सफैद पोश से पूछा। सेठ मानक चन्द को, वही जिन की लाल दरवाज़े के पास सेठ ज्वैलर्स की दुकान है। हाँ वही, अब की 10 हज़ार पडेंगे। ठीक है जैकेट वाला तैयार हो गया।

तीन रोज़ के बाद शहर के सारे ही अख़बारों में सेठ मानक चन्द के क़त्ल की ख़बर थी। मानक चन्द को उनके घर के बाहर ही किसी ने उनकी गर्दन तेज़ धार से रेत दी थी।

उस रोज़ जागो भोले नाथ पृथ्वी पर बड़ा पाप हो रहा है कि आवाज़ में बड़ा ही दर्द था।

जुग्गा आज मैं ने तुम को एक बहुत ज़रूरी काम से बुलाया है, तुम्हे एक सांप के बच्चे का सर कुचलना होगा। साहब मैं ने आज तक सांप क्या चूहा भी नहीं मारा है। आप तो जानते हैं अपन सिर्फ आदमी को मारता है।

जुग्गा तू मज़ाक़ बहुत करने लगा है तुझे मालूम है मुझे बे वक़्त मज़ाक़ पसंद नहीं। अच्छा बताओ किस को मारना है। जुग्गा अब संजीदा हो गया था। राहुल को मारना है। राहुल तो आप के मरे हुये भाई का बच्चा है, क्या जायदाद का चक्कर है जुग्गा ने पूछा। इस से पहले तो तूने इस तरह के सवालात नहीं किये थे आज क्यो पूछ रहा है। ठीक है तुम्हारा काम हो जायेगा।

अगले रोज़ अख़बारों में हरदास जी के पांच साला भतीजे के क़त्ल की ख़बर थी।

किसी ने उस को बहुत बेदर्दी से गला गला घोट कर मार दिया था।

जागो भोले नाथ ज़मीन पर बड़ा पाप हो रहा है। आज मन्दिर से काफी देर यही सदा आती रहीं।

जुग्गा आज कल तू खूब कमाई कर रहा है, करोड़पति करोड़ी मल उससे पूछ रहा था। करोड़ीमल मल का जवाब जुग्गा ने दांत फाड़कर ही ही करके दिया था।

करोड़ीमल ने एक फोटो निकाल कर जुग्गा की तरफ़ बढ़ा दिया था। ये एक नौजवान औरत की तस्वीर थी। उसका पता फाटो के पीछे लिखा हुआ है करोड़ीमल ने जुग्गा से कहा। क्या आज ही खल्लास करना है नहीं कोई जल्दी नहीं लेकिन हफ़्ता दो हफ़्ता में ये काम हो जाना चाहिये।

शाम हो रही थी और जुग्गा उस फोटो के पीछे लिखे पते पर आ गया था। अब वह एक मकान के फाटक के पास खड़ा था। अब वह दोबारा फोटो गौर से देख रहा था। देखने में तो सीधी लगती

है। कहीं इसको देखा है, कौन है ये वह फोटो घूरता रहा। ये स्वेता लगती है। उसके दिमाग में एक दम से झन्नाटा हुआ। वह फोटो एक नौ उम्र 14-15 साल की लड़की में बदल चुकी थी स्वेता उसके कस्बे में उस की पड़ासे में रहती थी। हीरा लाल जी की बेटी अपने कई बहन भाइयों में वह सब से बड़ी थी वह और स्वेता बचपन से एक साथ बड़े हुये थे और जब वह घर से भागा तथा तो स्वेता ने दसवें का इम्तिहान पास कर लिया था। वह स्वेता के बारे में सोचने लगा। कितने अच्छे दोस्त थे वो दोनों। वह स्वेता से दो दरजे आगे था और स्वेता की पढ़ाई में मदद करता था। फिर वह कितनी बुरी सोहबत में पड़ गया था। छोटी सी उम्र में जुआ और सिग्रेट की लत लग गई थी। स्वेता उसे बिगड़ते देखते रही और समझानें की कोशिश भी करती रही। लेकिन सब बेकार, फिर वह घर से भाग गया था। पहले वह चोरी करता था फिर रहज़नी और अब वो पेशेवर क़ातिल। पता नहीं अब तक वह कितनों को मौत के घट उतार चुका था। कितनी भयानक और पाप की ज़िन्गदी गुज़ार रहा है उसने सोचा। उसने काल बेल पर उंगली रख दी थी थोड़ी ही देर में जीती जागती स्वेता उस के सामने खड़ी थी और सवालिया निगाहों से उसे देख रही थी। आप स्वेता हैं न उसने पूछा था। जी हाँ लेकिन आप, आप ने मुझे पहचाना नहीं मैं आपके बचपन का साथी जगदीश हूँ। वही जगदीश जो बचपन में अपने घर से भाग गया था। स्वेता अब भी उसे घूरे जा रही थी फिर जैसे चौंक कर बोली जगदीश तुम कहाँ चले गये थे। तुम ने अपने घर वालों को कितना परेशान किया। आओ, आओ अन्दर आओ। अब वह दोनों ड्राइंग रूम में बैठ गये थे। तुम कैसी हो वह अब स्वेता से पूछ रहा था बस ठीक हूँ तुम बताओं कहाँ चले गये थे क्या करते हो अब मेरा घर तुम्हे कैसे पता चला। स्वेता ने कई सवाल एक साथ कर दिये थे। बस एक रोज़ इधर से गुज़र रहा था तुम्हे घर में दाखिल होते देखा शुबा हुआ तुम स्वेता हो बस आज आ गया जुग्गा यानि जगदीश ने उस के आखिरी सवाल का जवाब दिया था, और बताओ तुम्हारे पती परमेश्वर कहाँ हैं क्या करते है। आनंद Chemicals के मैनेजिंग डायरेक्टर थे। अब नहीं है।

क्या हुआ था?

शादी के दूसरे ही साल छोड़ गये।

कहाँ गये, ऊपर परलोक में।

ओव बड़ा अफसोस हुआ। कैसे क्या हुआ था।

शिमला लेकर घूमने गये थे, ठन्ड लग गई, नमूनिया हो गया था अरे जवान मौत। जुग्गा ने फिर अफसोस ज़ाहिर किया था।

नहीं। उन्होंने नौकरी से रिटायरमेन्ट के बाद मुझ से शादी की थी। वैसे कोई परेशानी नहीं है वह एक बड़ा सा घर और ख़ासी जायदाद छोड़ गये थे।

-------0--------0--------

देखे जगदीश ये हमारी चौथी मुलाक़ात है लेकिन तुमने अपने बारे में कुछ नहीं बताया। स्वेता जुग्गा से पूछ रही थी।

क्या करोगी पूछ कर कितनी पाप की ज़िन्गदी गुज़ार रहा था।

काश मैं घर से नहीं भगता, जुग्गा एक ठन्डी सांस लेकर बोला।

श्वेता सोचने लगी। ये बचपन में बुरी सोहबत में पड़ गया और फिर घर से भागने के बाद और ज़माने के धक्के खाने के बाद ही मुजरिमाना ज़िन्दगी ऐख़्तियार की होगी इसको कभी कोई समझाने वाला नहीं मिला होगा वरना ये आज ऐसा नहीं होता। ये अब भी एक अच्छा इंसान बन सकता है लेकिन इसको समझाये कौन।

अब जुग्गा और श्वेता रोज ही मिलते थे। जुग्गा श्वेता के घर आ जाता था और फिर दोनों घन्टों बाते किया करते थे। जुग्गा अपनी मुजरिमाना ज़िन्गदी का रोना रोया करता था लेकिन श्वेता को उसने ये नहीं बताया कि वह पेशावर क़ातिल बन गया। श्वेता सोचती थी वह जगदीश को सहारा दे सकती है उसे से शादी करके। आखिर को वह बचपन में जगदीश को पसंद ही करती थी। और एक दिन उसने जगदीश के सामने शादी का परपोज़ल रख दिया। जगदीश बोला श्वेता ऐसा करके तुम मुझ पर एहसान करोगी मगर मैं तुम्हारे लायक़ हर गिज़ नहीं हूँ।

--------0---------0---------

श्वेता ने नाश्ता वगैरा किया फिर ड्राइंग रूम में आकर बैठ गई। वह जगदीश का इन्तिज़ार कर रही थी आज उसने जगदीश के साथ इरम पंचल जाने का प्रोग्राम बनाया था। इरम पंचल शहर से पचास किलो मीटर दूर एक खूबसूरत पहाड़ी इलाक़ा था और श्वेता को बेहद पसंद था। वह सोफे पर बैठी जगदीश के ख़्यालों में गुम थी तब ही जगदीश आ गया। वह दोनों इरम पंचल के लिये निकल गये।

जगदीश ने रास्ते में एक कोठी के सामने गाड़ी रोकी और श्वेता से बोला वह यहीं कार में उसका इन्तिज़ार करे वह एक मिनट में वापस आता है। जगदीश को आने में थोड़ी देर लगी वह कुछ परेशान सा भी लग रहा थ। ये तो लाला करोड़ी मल की कोठी है स्वेता ने उससे पूछा, हाँ लेकिन तुम उसे कैसे जानते हो जगदीश चौंका था। लाला करोड़ी मल मेरे शौहर का दोस्त था उनके इन्तिक़ाल के बाद मुझ से शादी करना चाहता था। मेरे इनकार करने के बाद अब मुझे मार डालने की धमकी दे रहा है।

वह दोनों इरम पंचल पहुंच गये थे एक दूसरे में खोये हुये इधर उधर घूमते रहे कभी एक पहाड़ी पर कभी दूसरी पहाड़ी पर।

श्वेता तुम सुबह से घूम रही हो थकी नहीं। ये जगह मुझे बहुत पसंद है जगदीश। फिर जब तुम्हारा साथ हो तो थकने का क्या सवाल।

चलो जगदीश उस ऊंची वाली पहाड़ी पर चलते हैं वहाँ से सूरज डूबते हुये देखेंगे। अब दोनों उस पहाड़ी की तरफ चल दिये थे। सूरज अभी डूबने के क़रीब था। जल्दी चलो जगदीश सूरज पहले डूब जायेगा। तो मज़ा नहीं आयेगा। वह दोनों अब पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गये थे। सूरज आधे से ज़्यादा डूब चुका था, दोनों डूबते सूरज को देखते रहे देखते देखते सूरज बहुत दूर ज़मीन में धँस गया था। और उस के साथ साथ श्वेता का सूरज भी डूब गया। जगदीश ने पीछे हटकर एक ज़ोर दार धक्का सविता को दिया था और श्वेता पत्थरों से टकराती रगड़ खाती नीचे बहुत गहरी

खाई में गिर गई।

उस रात जागो भोले नाथ पृथ्वी पर बड़ा पाप हो रहा है की आवाज़ में बला का दर्द और फरयाद थी। और जगदीश उर्फ जग्गा नशे में डूबा हुआ मुसलसल जागो भोलेनाथ की सदायें लगा रहा था। आज मोहल्ले वालों ने ये मानूस आवाज़ काफ़ी दिनों के बाद सुनी थी। लेकिन आज जैसा दर्द उस आवाज़ में पहले कभी नहीं था।

जगदीश उर्फ जग्गा हमेशा मन्दिर के फाटक के बाहर पड़े पड़े जागो भोलेनाथ की सदाये लगाता था आज ज़्यादा ही बे सुध था। अब वह मन्दिर के फाटक के ऊपर लटके बड़े से घन्टे को पकड़ कर लटक गया था और उस को पकड़ कर झूमने लगा था और वह घन्टा जो सिर्फ पुजारियों की हलकी सी जुम्बिश का आदी था जुग्गा के पूरे बदन का बोझ नहीं संभाल सका उसकी रस्सी टूट गई थी और जुग्गा का सर मन्दिर की फर्श से टकराने के साथ साथ वह घन्टा भी इतनी ज़ोर से उसके सर से टकराया कि उस के सर का भेजा बाहर निकल पड़ा था। जुग्गा को मरने से पहले एक बार छटपटानें को मौक़ा भी नहीं मिल सका था।

भोले नाथ जाग चुके थे।

★★★